काफिले बदल गए

ज़िन्दगी के इस दौड़ में काफिले बदल गए
कभी दोस्त छूटे, कभी अपने
जो कभी हमसे मिलने के लिए तड़पते थे
वोह आज सपनो में खो गए |
पैसे और किस्मत की मोहब्बत में वो खो गए
जो कभी आते थे दर्द-ए-दिल बयां करने
सुकून-ए -हसरत में जीने लगे |
ख़ामोशी अख्तयार कर ली मैंने, जुबान बंद
लोगो को लगा अहंकार की चादर ओढ़ ली
दिल-ए-नादान में झाँका नहीं किसी ने
फुरसत कहा मिली किसी को हमें समझने की |
वो आगे बढ़ गए बोलते हुए
हम खड़े रह गए देखते हुए
मंजर दूर तलक दिखा उनके जाने का
कदम ठहर गए, आँखे भीग गयी |
अजीब सी दास्ताँ हैं इंसान के सोच की
कब किस बात से मंजर बदल जाये,
कब कौन ठहर जाये, कब रास्ते बदल जाये
आशाएं हमें आज भी जिलाये और जगाये हुए हैं
वरना इंसान तो आज भी रुक जाये, बढ़ना ही छोड़ दे
ज़िन्दगी के इस दौर में काफिले बदल गए ||

अभयकांत श्रीवास्तव